# Ancient Vedic Mantras and Rituals

# Shrimad Bhagavad Gita Chapter–2 Shalok–28 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो–श्लोक अट्ठाईस | PDF

## अध्याय 2 – सांख्य योग

### श्लोक 28

**अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।**
**अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ 2.28 ॥**

## सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!
सभी प्राणी जन्म से पहले अव्यक्त (अदृश्य, अज्ञात) अवस्था में रहते हैं। जन्म लेने पर वे व्यक्त (दिखाई देने वाली) अवस्था में आते हैं। मृत्यु के बाद फिर से अव्यक्त ही हो जाते हैं। जब जीव का आरम्भ और अंत—दोनों ही अदृश्य हैं—तो बीच की थोड़ी-सी दृश्य अवस्था के लिए शोक कैसा?

## विस्तृत व्याख्या

भगवान श्रीकृष्ण यहाँ जीवन की एक गहन आध्यात्मिक प्रक्रिया समझाते हैं— जीव का असली स्वरूप न जन्म में दिखाई देता है, न मृत्यु में।

### 1. जन्म से पहले जीव अव्यक्त होता है

जीव का अस्तित्व हमेशा रहता है,
परंतु जन्म से पहले वह हमारी इंद्रियों से परे, अदृश्य और सूक्ष्म अवस्था में होता है।
हम उसे देख नहीं सकते, परंतु वह अस्तित्व में होता है।

यह ठीक उसी तरह है जैसे सूर्य बादलों के पीछे छिपा हो—
दिखाई न देने पर भी वह मौजूद रहता है।

### 2. जीवन के मध्य में ही जीव व्यक्त होता है

जन्म के बाद प्राणी दृश्य रूप लेता है—
उसका शरीर, व्यवहार, अनुभव सब दिखाई देते हैं।
पर यह दृश्य रूप केवल थोड़े समय के लिए है।
जैसे तरंगें समुद्र से उठती हैं और कुछ समय दिखकर फिर लुप्त हो जाती हैं।

### 3. मृत्यु के बाद फिर अव्यक्त हो जाता है

शरीर समाप्त होने पर जीव फिर से सूक्ष्म, अदृश्य अवस्था में चला जाता है।
मृत्यु अंत नहीं, केवल दृश्य रूप का विसर्जन है।

## तर्क का उद्देश्य

कृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं—
जब जीव शुरुआत में भी अदृश्य था और अंत में भी अदृश्य होने वाला है, तो बीच के छोटे से दृश्य रूप के लिए अत्यधिक शोक क्यों?

अव्यक्त से व्यक्त होकर फिर अव्यक्त में लौटने वाली प्रक्रिया पर शोक करना तर्कसम्मत नहीं है।

## गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक मन को यह गहरा बोध कराता है—
दिखाई देने वाला संसार क्षणिक है।
जीव का वास्तविक स्वरूप दृश्य नहीं, बल्कि सूक्ष्म और शाश्वत है।

जब हम जानते हैं कि:

- जन्म—अव्यक्त से व्यक्त का आगमन है
- मृत्यु—व्यक्त से अव्यक्त में लौटना है

तो शोक का स्थान नहीं रहता।
यह समझ मन में शांति, स्थिरता और वैराग्य लाती है।

कृष्ण अर्जुन को भौतिक देह से परे, आत्मा की अखंड यात्रा पर दृष्टि देने के लिए प्रेरित करते हैं।

## पदों का भावार्थ

- अव्यक्त-आदीनि भूतानि – प्रारम्भ में जीव अव्यक्त होता है
- व्यक्त-मध्यानि – मध्य में व्यक्त अर्थात दृश्य होता है
- अव्यक्त-निधनानि एव – मरने के बाद फिर अव्यक्त हो जाता है
- तत्र का परिदेवना – ऐसी प्रक्रिया पर शोक कैसा?

## श्लोक का संदेश

- जीव का आरम्भ और अंत दोनों अदृश्य हैं
- दृश्य केवल मध्यम अवस्था है
- क्षणिक पर शोक करना उचित नहीं
- आत्मा की यात्रा अनादि और अनंत है
- कर्तव्य का पालन करते हुए स्थिर बुद्धि से जीवन जीना चाहिए

# RELATED ARTICLE

Chapter -2 Shalok – 26

Chapter -2 Shalok – 27

# THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS